वन से फैशन तक

जनजातीय भारत का वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में प्रवेश

27 मार्च, 2026

भारत के जनजातीय क्षेत्रों में जारी शांत क्रांति

भारत के जनजातीय समुदाय वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपनी भूमिका को नए सिरे से परिभाषित कर रहे हैं, वन-आधारित आजीविका को टिकाऊ, उच्च-मूल्य वाले उत्पादों में बदल रहे हैं, जो आधुनिक उपभोक्ताओं को आकर्षित करते हैं। निर्वाह से उद्यम की ओर यह बदलाव जनजातीय अर्थव्यवस्थाओं के व्यापक पुनर्परिकल्पना को दर्शाता है, जहां परंपरा अब अलग नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय और वैश्विक बाजारों के साथ ही एकीकृत है।

यह बदलाव भारत ट्राइब्स फेस्ट 2026 में साफ तौर पर प्रदर्शित किया जा रहा है, जो 18-30 मार्च 2026 तक सुंदर नर्सरी, नई दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है। जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ (टीआरआईएफईडी) द्वारा जनजातीय मामलों के मंत्रालय के सहयोग से आयोजित, यह महोत्सव एक राष्ट्रीय मंच के रूप में कार्य करता है, जहां भारत की जनजातीय विरासत अपने सबसे जीवंत रूप में सामने आती है। शिल्प, संस्कृति, उद्यमशीलता और आजीविका का जश्न मनाते हुए, यह जनजातीय परंपराओं को देश के सांस्कृतिक और आर्थिक परिदृश्य में सबसे आगे लाता है।

यह बदलाव लक्षित नीतिगत हस्तक्षेपों के ज़रिए संचालित है, जिनमें रीसा: ए प्रीमियम ट्राइबल ब्रांड, वन धन योजना और ट्राइब्स इंडिया नेटवर्क जैसे कार्यक्रम शामिल हैं। जनजातीय कारीगर वन-आधारित आजीविका अर्थव्यवस्थाओं से वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में सक्रिय भागीदारी की ओर आगे बढ़ रहे हैं। इससे एक ऐसी कहानी उभरती है, जो विरासत और महत्वाकांक्षा का एक अनूठा संगम है, जहां वन फैशन से मिलते हैं और प्राचीन कौशल को अपने वास्तविक बाजार मूल्य मिलते हैं।

महोत्सव के मुख्य आकर्षण

** 75 वन धन विकास केंद्र*	** 400+ जनजातीय कलाकार *17 लाइव प्रदर्शन*
** 310 कला एवं शिल्प प्रतिभागी*	**120 जनजातीय व्यंजन प्रतिभागी*

ट्राइब्स इंडिया मॉडल: वन धन से मूल्य श्रृंखला तक

भारत की जनजातीय अर्थव्यवस्था को संस्थागत ढांचों के ज़रिए व्यवस्थित तरीके से नया रूप दिया जा रहा है, जो आजीविका सुरक्षा को बाजार पहुंच के साथ जोड़ते हैं। सरकार ने यह माना है कि जनजातीय समुदायों, जो देश के सबसे कुशल कारीगरों में से हैं, उन्हें केवल मदद से ज्यादा सशक्तिकरण की ज़रुरत है। इसका अर्थ है कि कच्चे माल के मात्र आपूर्तिकर्ताओं से वैश्विक बाजारों में प्रीमियम मूल्य प्राप्त करने वाले ब्रांडों के निर्माता और स्वामी बनने के लिए एक संरचनात्मक परिवर्तन को सक्षम बनाने की ज़रुरत है।

ट्राइफेड के नेतृत्व वाला ट्राइब्स इंडिया नेटवर्क जनजातीय उत्पादकों को शहरी उपभोक्ताओं से सीधे जोड़ता है, जिससे मध्यस्थों की भूमिका खत्म हो जाती है। वन धन विकास केंद्र (वीडीवीके)

जनजातीय मामलों के मंत्रालय और ट्राइफेड द्वारा शुरू किए गए सामुदायिक स्वामित्व वाले केंद्र हैं, जिनका उद्देश्य जनजातीय संग्राहकों के लिए स्थायी आजीविका को बढ़ावा देना है। ये केंद्र लघु वन उपज (एमएफपी) के मूल्यवर्धन, प्रसंस्करण और ब्रांडिंग पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिससे जनजातीय आय में वृद्धि होती है। प्रत्येक वीडीवीके समूह 15 जनजातीय स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के संघ के रूप में संरचित है, जिन्हें वन धन केंद्र भी कहा जाता है। प्रत्येक एसएचजी में 20 तक जनजातीय गैर-लकड़ी वन उपज (एनटीएफपी) संग्राहक या कारीगर शामिल होते हैं, जो एक ही समूह के भीतर लगभग 300 लाभार्थियों को एक साथ लाते हैं और सामूहिक उद्यम विकास को सक्षम बनाते हैं।

यह मॉडल सामूहिक खरीद, साझा प्रसंस्करण अवसंरचना, कौशल विकास और मजबूत बाजार संबंधों को सक्षम बनाता है, जिससे दक्षता और सौदेबाजी की शक्ति बढ़ती है। बस्तर में महुआ या इमली का प्रसंस्करण करने वाली महिलाएं अब केवल किसान नहीं हैं, वे औपचारिक मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकृत सूक्ष्म उद्यमी के रूप में उभर रही हैं। साथ ही, रीसा जनजातीय शिल्प कौशल को बढ़ावा दे रही है और इसे वैश्विक बाजार में एक प्रीमियम पेशकश के रूप में दोबारा स्थापित कर रही है।

जनजातीय उत्पादक कच्चे वन उत्पाद, लघु वन उत्पाद और हस्तशिल्प इन वन धन विकास केंद्र केंद्रों में लाते हैं, जहाँ उनकी गुणवत्ता का निर्धारण, मूल्यवर्धन, पैकेजिंग और दस्तावेज़ीकरण किया जाता है। यहाँ से, ये उत्पाद ट्राइब्स इंडिया के खुदरा नेटवर्क, प्रमुख हवाई अड्डों और प्रीमियम मॉल में स्थित स्टोरों, साथ ही ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्मों के ज़रिए अंतर्राष्ट्रीय खरीदारों और निष्पक्ष व्यापार बाजारों तक पहुँचते हैं।

ट्राइफेड ने राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफटी) सहित डिज़ाइन संस्थानों के साथ भी साझेदारी की है, ताकि पारंपरिक शिल्पकला को उनकी सांस्कृतिक प्रामाणिकता को कम किए बिना समकालीन उपभोक्ताओं की पसंद के अनुसार बनाया जा सके। छत्तीसगढ़ का एक डोखरा पेंडेंट, जो कभी स्थानीय बिचौलिए को मामूली कीमत पर बेचा जाता था, अब अपनी प्रमाणित पहचान के तहत कई गुना अधिक मूल्य पर बिकता है।

रीसा: टाइमलेस ट्राइबल–एक प्रीमियम ट्राइबल ब्रांड

जनजातीय मामलों के मंत्रालय के नेतृत्व में रीसा, घरेलू और वैश्विक बाजारों में जनजातीय शिल्पों को प्रमुख स्थान दिलाने की एक अग्रणी पहल है। त्रिपुरा के पारंपरिक रीसा कपड़ों से प्रेरित यह ब्रांड, विरासत को समकालीन डिजाइन और ब्रांडिंग के साथ जोड़ता है।

मुख्य विशेषताएं

- आधुनिक, बाजार के लिए तैयार संग्रहों के लिए डिजाइनर-कारीगर सहयोग
- नवाचार, गुणवत्ता और वैश्विक स्थिति पर विशेष ध्यान
- जनजातीय शिल्प समूहों का विकास और सुदृढ़ीकरण

प्रमुख शिल्प

- एरी और मूगा रेशम – असम
- कोटपैड कपास – ओडिशा
- चांग्पा पश्मीना – लद्दाख
- टोडा कढ़ाई – तमिलनाडु
- लोंगपी मिट्टी के बर्तन – मणिपुर
- तुरतुक पीतल के कटलरी – लद्दाख
- डोखरा कला – छत्तीसगढ़

जनजातीय अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाती महिलाएं

इस कहानी का सबसे महत्वपूर्ण पहलू लैंगिक समानता है। महिलाएं केवल निष्क्रिय लाभार्थी नहीं हैं- वे उत्पादक, नेता और गुणवत्ता संरक्षक हैं, जो बदलाव ला रही हैं। महिला नेतृत्व वाली सहकारी समितियां आर्थिक सशक्तिकरण के केंद्र बन गई हैं, जो सामूहिक बचत, सूक्ष्म ऋण और कच्चे माल में साझा निवेश को सक्षम बना रही हैं। कई महिलाओं के लिए, ट्राइफेड ने उन्हें पहली औपचारिक आर्थिक पहचान प्रदान की है, जिससे पहले से अपरिचित जीवन निर्वाह कार्य को दस्तावेज़ों में लिखित श्रम के तौर पर बदला गया है।

भारत ट्राइब्स फेस्ट 2026 में, ये बदलाव न केवल मापने योग्य नतीजों में दिखाई देते हैं, बल्कि स्वयं महिलाओं की वास्तविकताओं और कहानियों में भी परिलक्षित होते हैं, जो उनकी आवाजों और अनुभवों की एक आकर्षक झलक पेश करते हैं।

परिवर्तनकारी महिलाएं जो परंपरा को भविष्य में पिरो रही हैं

मिजोरम के लॉंगटलाई जिले के कमलानगर की रहने वाली **चकमा जनजाति** की **24 वर्षीय युवा उद्यमी देबोंगशी चकमा** चुपचाप बदलाव की एक सशक्त कहानी लिख रही हैं, जहां परंपरा को पीछे नहीं, बल्कि वैश्विक बाजार में आगे बढ़ाया जा रहा है। चकमा सांस्कृतिक विरासत में गहराई से निहित, वह स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को गरिमा, पहचान और आर्थिक सशक्तिकरण के मार्ग के रूप में पुनर्परिभाषित कर रही है।

बोधिब्लूम सोसाइटी की संस्थापक के रूप में, देबोंगशी 500 से अधिक सदस्यों के एक जीवंत समूह का नेतृत्व करती हैं, जो महिलाओं को सशक्त बनाने पर विशेष ध्यान देता है, विशेषकर सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं, जिनमें तलाकशुदा महिलाएं भी शामिल हैं। उनकी पहल किसी एक शिल्प तक सीमित नहीं है, यह आजीविका सृजन के एक विविध, समुदाय-आधारित मॉडल को अपनाती है। हाथ से बुने वस्त्रों और पारंपरिक भोजन पद्धतियों से लेकर झूम खेती और बांस आधारित उत्पादों तक, उनका काम पारिस्थितिकी, संस्कृति और उद्यम को सहजता से एकीकृत करता है।

“मैं किसी भी महिला को पीड़ित या बेरोजगार नहीं देखना चाहती। मेरा लक्ष्य अवसर पैदा करना है, ताकि मेरे समुदाय की हर महिला आत्मनिर्भर और सशक्त हो सके। मैं अपनी परंपराओं को संरक्षित करना चाहती हूं और वैश्विक मंच पर अपनी संस्कृति का गौरवपूर्वक प्रतिनिधित्व करना चाहती हूं।”

मशीनीकृत अवसंरचना से वंचित क्षेत्र में काम करने वाली देबोंगशी की यात्रा जनजातीय समुदायों के सशक्तिकरण और रचनात्मकता को दर्शाती है। ट्राइफेड के सहयोग से, उनके उत्पाद अब स्थानीय बाजारों से कहीं अधिक व्यापक दर्शकों तक पहुँच रहे हैं, जिससे पारंपरिक प्रथाओं को स्थायी आय का स्रोत बनाया जा रहा है और साथ ही सांस्कृतिक प्रामाणिकता भी संरक्षित हो रही है। वैश्विक उपभोक्ता हस्तनिर्मित, पर्यावरण के अनुकूल वस्तुओं की ओर आकर्षित हो रहे हैं, ऐसे में उनका काम स्थिरता और विरासत के संगम पर दिखता है।

विरासत को हथकरघा में ढालना

झारखंड के कजरी गाँव की **23 वर्षीय** संथाल कारीगर **उर्मिला सोनवार**, अपने सांस्कृतिक और पारिस्थितिक परिवेश से प्रेरित एक उभरती हुई युवा डिजाइनर हैं। उनका काम स्थानीय पवित्र अनुष्ठान "बारह खंड" और उनके गाँव के पर्वतीय परिदृश्य से प्रेरित है, और इन तत्वों को हाथ से बुनी हुई साड़ियों में रूपांतरित करता है, जो देखने में आकर्षक होने के साथ-साथ पहचान से गहराई से जुड़ी हुई हैं।

12वीं कक्षा तक की शिक्षा पूरी करने के बाद, उर्मिला ने अपना जीवन बुनाई को समर्पित कर दिया, विरासत को आजीविका का स्रोत बनाया और स्वदेशी परंपराओं को संरक्षित किया। उनके डिजाइन न केवल उन्हें आर्थिक रूप से सहारा दे रहे हैं, बल्कि संथाल संस्कृति को व्यापक पहचान भी दिला रहे हैं, जिससे स्थानीय शिल्पों को राष्ट्रीय और वैश्विक बाजारों में व्यापक स्थान मिल रहा है। अपने काम के ज़रिए, वह शिल्पकारों की एक नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो सांस्कृतिक राजदूत हैं, और रचनात्मकता और उद्देश्य के साथ अपने समुदाय की विरासत को आगे बढ़ा रही हैं।

“मैं चाहती हूँ कि मेरे काम के ज़रिए हमारे गाँव और उसकी परंपराओं को पहचान मिले। जब कोई मेरी साड़ी देखे, तो उसे तुरंत पता चल जाए कि यह कजरी से आई है। हथकरघा के ज़रिए, मैं अपनी स्वदेशी संस्कृति को पहचान और दृश्यता देना चाहती हूँ।”

बुनाई की बागडोर संभालने वाली बुजुर्ग महिलाएं

तमिलनाडु के नीलगिरी पहाड़ों की रहने वाली 42 वर्षीय टोडा कारीगर संगीता के लिए कढ़ाई एक सीखी हुई कला नहीं, बल्कि जीवन भर की विरासत है। मोटे सफेद सूती कपड़े पर लाल और काले धागे से काम करते हुए, वह जटिल ज्यामितीय पैटर्न बनाती हैं, जो पीढ़ियों से महिलाओं द्वारा चली आ रही हैं।

टोडा समुदाय की संख्या लगभग एक हजार है, इसलिए यह परंपरा बेहद खास है। नीलगिरी से बाहर दिखाई देने वाली अधिकांश कलाकृतियाँ दशकों के अभ्यास का नतीजा हैं, जो किशोरावस्था से ही शुरू हो जाती हैं। संगीता एक कारीगर और सेतु दोनों की भूमिका निभाती हैं, इस शिल्प को व्यापक मंचों तक ले जाती हैं और यह देखती हैं कि इसे बनाए रखने वाली महिलाओं को पहचान और प्रतिफल मिले।

कचरे से मूल्य तक: एक सतत् शिल्प यात्रा

उत्तराखंड के उधम सिंह नगर में रहने वाली थारू जनजाति की **45 वर्षीय अनीता राणा** यह दर्शाती हैं कि कैसे पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान सतत् आजीविका को सशक्त बना सकता है। 300 से अधिक सदस्यों वाले एक महिला समूह का हिस्सा होने के नाते, उन्हें बेहतर बाजार पहुंच, उचित मूल्य और सारस मेले और जनजातीय उत्सवों जैसे मंचों पर अपने काम को प्रदर्शित करने के अवसर मिले हैं।

उनका शिल्प मुंजा घास की बुनाई पर केंद्रित है-एक मौसमी, जैव-अपघटनीय संसाधन, जिसे रोटी के गर्म खोल जैसी उपयोगी वस्तुओं में बदल दिया जाता है, जो प्लास्टिक का एक पर्यावरण-अनुकूल विकल्प प्रदान करता है। युवा महिलाओं को प्रशिक्षण देकर, अनीता इस स्वदेशी प्रथा को संरक्षित कर रही हैं और साथ ही अपने समुदाय में सम्मानजनक आजीविका को सक्षम बना रही हैं। उनकी

यात्रा दिखाती है कि कैसे स्थिरता, परंपरा और उद्यम एक साथ मिलकर एक स्थायी प्रभाव पैदा कर सकते हैं।

> “मुंजा घास की बुनाई हमारी संस्कृति का हिस्सा है और पर्यावरण के लिए भी एक अच्छा उपाय है। हम जो बनाते हैं वह पूरी तरह से प्राकृतिक है और प्रकृति को नुकसान नहीं पहुंचाते। मैं चाहती हूं कि युवा पीढ़ी इसे सीखे, ताकि हमारी परंपरा चलती रहे और अधिक महिलाएं सम्मान के साथ कमाई कर सकें।”

पहचान पर आधारित विकास

जैसे-जैसे भारत के जनजातीय समुदाय वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में प्रवेश कर रहे हैं, एक बात साफ है। आदिवासी कारीगरों द्वारा बनाई गई वस्तुओं की नकल मशीनों द्वारा नहीं की जा सकती और यही खासियत बड़े पैमाने पर उत्पादन के युग में उनकी सबसे बड़ी ताकत बन गई है। ट्राइफेड और रीसा जैसी पहलें इस ताकत को स्थायी आय और सम्मान में बदलने में मदद कर रही हैं।

वन धन विकास केंद्रों के विस्तार, ट्राइब्स इंडिया की ई-कॉमर्स उपस्थिति में वृद्धि और भारत ट्राइब्स फेस्ट 2026 जैसे मंचों पर बढ़ती दृश्यता के साथ, विभिन्न क्षेत्रों के कारीगर लाभार्थी के बजाय रचनाकार के रूप में अपनी शर्तों पर बाजार से जुड़ सकते हैं।

वन उत्पादों से लेकर वैश्विक डिजाइन केंद्रों तक, जनजातीय भारत केवल वस्तुओं का उत्पादन नहीं कर रहा है, बल्कि यह विकास का एक ऐसा मॉडल तैयार कर रहा है जो टिकाऊ, समावेशी और गहरी जड़ों वाला है।

संदर्भ

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2241924&reg=3&lang=1

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2242221&reg=3&lang=1

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2106121&reg=3&lang=2

पीआईबी शोध

पीके/केसी/एनएस